वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 410
ISBN-978-93-82071-97-6

सप्तपरम स्थान विधान

-रचयित्री-

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनधर्म में वर्तमानकाल के प्रथम तीर्थंकर आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव के मोक्षकल्याणक माघ कृष्णा चौदस 29 जनवरी 2014 के अवसर पर परम पूज्य चारित्र चंद्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमृतमहोत्सव 2013-14 के अंतर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.ए फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540,	मूल्य
1100 प्रतियाँ	माघ वदी ग्यारस, 29 जनवरी 2014	32/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में साहित्य सृजन की अविरल धारा को प्रवाहित करके जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना की है तथा जैन साहित्य जगत पर भी अनंत उपकार किए हैं। विशेषरूप से आपकी लेखनी से प्रसूत पद्य साहित्य अर्थात् पूजा विधान से जन-जन को अमोघ शस्त्र के रूप में भक्ति का मार्ग प्राप्त हुआ है।

विधानों की श्रृंखला में यह 'सप्तपरमस्थान विधान' अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण विधान है। इसमें प्रथम 'सज्जाति' परमस्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बिना अन्य स्थान प्राप्त नहीं हो सकते। जैन समाज में 84 जातियाँ मानी जाती हैं सभी अपने-अपने में शुद्ध हैं। सज्जाति का मतलब जैसे-खण्डेलवाल जाति के लोगों का खण्डेलवाल जाति में विवाह संबंध होना सज्जाति है। आज सबसे ज्यादा आवश्यकता है कि लोग अपनी ही जाति में विवाह सम्बन्ध करें। अभी तक जितने भी तीर्थंकर, महापुरुष आदि हुए हैं सभी सज्जाति वाले ही रहे हैं।

आचार्य श्री जिनसेन स्वामी ने लिखा है-'विशुद्धकुलगोत्रस्थ सद्वृत्तस्य वपुष्मतः'' अर्थात् विशुद्ध कुल-गोत्र में उत्पन्न सदाचार-सम्पन्न और सुन्दर शरीर वाले ही जिन-दीक्षा धारण करने के पात्र हैं। जिसका खानदान शुद्ध है वही दीक्षा का अधिकारी है।

पूज्य माताजी की सतत यही भावना रहती है कि लोग इस बात को समझें और सज्जाति को महत्त्व दें। इसके लिए अनेक बार खानदान, खानपान शुद्धि पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से संगोष्ठी हो चुकी हैं। माताजी दर्शनार्थ आने वाले भक्तों को, बालक, बालिकाओं को नियम देती हैं कि आप सभी लोग सज्जाति में ही संबंध करें। सज्जाति के साथ आगे के अन्य परमस्थानों को प्राप्त करने के लिए आप सभी सप्त तीर्थंकरों की पूजा, आराधना, भक्ति करें।

यह विधान सभी के जीवन में सप्तपरमस्थान को प्राप्त करावे, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, और उनके आशीर्वाद से वीर ज्ञानोदयग्रन्थमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

सज्जातिः सद्गृहित्वं च, पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता।
साम्राज्यं परमार्हन्त्यं, परिनिर्वाणमित्यपि।।

आदिपुराण पर्व 38, श्लोक 67 में लिखा है—सज्जाति, सद्गृहस्थ-श्रावक के व्रत, पारिव्राज्य-मुनियों के व्रत, सुरेन्द्रता, साम्राज्य-चक्रवर्ती पद, अरिहन्त पद और निर्वाण पद ये सात परमस्थान कहलाते हैं। सम्यग्दृष्टि जीव क्रम-क्रम से इन परमस्थानों को प्राप्त कर लेता है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 'सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान' में एक समुच्चय पूजन के साथ सज्जाति परमस्थान प्रदायक श्री ऋषभदेव, सद्गृहस्थ परमस्थान प्रदायक श्री चन्द्रप्रभ, पारिव्राज्य परमस्थान प्रदायक श्री नेमिनाथ, सुरेन्द्र परमस्थान प्रदायक श्री पार्श्वनाथ, साम्राज्य परमपद प्रदायक श्री शीतलनाथ, आर्हन्त्य परमस्थान प्रदायक श्री शांतिनाथ एवं निर्वाण परमस्थान प्रदायक श्री महावीर भगवान की पूजा दी है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण में लिखा है-

सप्ततीर्थंकरा लोके, सप्तपरमस्थानदाः।
सर्वसिद्धिप्रदातार-स्तेभ्यो मेऽनन्तशो नमः।।

अर्थात् इस लोक में सप्तपरमस्थान को देने वाले सप्त तीर्थंकर भगवान जो सर्वसिद्धि प्रदान करने वाले हैं उन्हें मेरा अनन्तबार नमस्कार है। मंगलाचरण के पश्चात् सप्त परमस्थान तीर्थंकर पूजा (समुच्चय पूजा) है। सप्तपरमस्थान में सज्जाति नाम का प्रथम परमस्थान प्रमुख है क्योंकि सज्जाति के बिना आगे के स्थान प्राप्त नहीं हो सकते। इस समुच्चय पूजा की जयमाला में लिखा है-

शुभजाति गोत्र वरवंश तिलक, जो सज्जाती के जन्मे हैं।
जो उभय पक्ष की शुद्धि सहित, औ उच्च गोत्र में जन्मे हैं।।
वे प्रथम परम पद सज्जाती, पाकर छह पद के अधिकारी।
वह सज्जाती स्थान सदा, भव भव में होवे गुणकारी।।

समुच्चय पूजा के बाद सप्तपरमस्थान प्रदायक श्री ऋषभदेव आदि सात तीर्थंकरों की पूजा है। छह तीर्थंकरों की पूजा में उन-उन तीर्थंकरों के 54-54 गुणों के अर्घ्य हैं। अतः 54 x 6 = 324 अर्घ्य हैं। अंतिम महावीर भगवान की पूजा में 108 अर्घ्य हैं अतः 324+108=432 अर्घ्य हैं। प्रत्येक पूजा में 1-1 पूर्णार्घ्य हैं अतः 7 पूर्णार्घ्य हैं एवं बड़ी जयमाला मिलाकर 9 जयमालायें हैं।

प्रत्येक पूजा के अंत में पूज्य माताजी ने इस सप्तपरमस्थान विधान की महिमा बताते हुए लिखा है-

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्त परमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भवि मन कमल विकसित करें।।

इस विधान की बड़ी जयमाला में सातों तीर्थंकरों की महिमा, विशेषता, अतिशय, एवं गुणों का वर्णन करते हुए पूज्य माताजी ने श्री ऋषभदेव, चंद्रप्रभ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, शीतलनाथ, शांतिनाथ एवं महावीर स्वामी को अनंतसुख की प्राप्ति के लिए अनंत बार नमस्कार किया है-

सप्त परमस्थान पद, सप्त तीर्थंकर वंद्य।
नमूँ अनंतों बार मैं, पाऊँ सौख्य अनंत।।

इस प्रकार इस विधान में कुल 8 पूजा, 432 अर्घ्य, 7 पूर्णार्घ्य एवं 9 जयमालाएँ हैं। अंत में प्रशस्ति है। पूज्य माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर में सप्तपरमस्थान तीर्थंकर का मन्दिर (तीनमूर्ति मंदिर के ऊपर शिखर में) भी बन गया है और उसमें प्रतिष्ठित सप्तपरमस्थान तीर्थंकर भगवान विराजमान हैं, जिनका दर्शन, वंदन कर आप सभी अपने जीवन को धन्य करें।

यह विधान सभी के जीवन में मंगलकारी हो, सप्तपरमस्थान को प्रदान करने वाला हो, भव-भव के संचित पाप पुंज को नष्ट करने वाला हो, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

दो शब्द

आर्यिका सुव्रतमती

श्री कुंदकुंद कृत आचार्य भक्ति में लिखा है-

देसकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकाय संजुत्ता।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगल मत्थु मे णिच्चं।।

अर्थात् देश, कुल, जाति से शुद्ध, विशुद्ध मन, वचन, काय से संयुक्त, ऐसे हे गुरुदेव! तुम्हारे चरण कमल हमारे लिए हमेशा मंगलमयी होवें।

त्रिलोकसार ग्रंथ में सिद्धान्त चक्रवर्ती श्री नेमिचन्द्राचार्य ने गाथा 914 में लिखा है-

दुब्भावअसुयसूदगपुप्फईजाइसंकरादीहिं।
कयदाणा वि कुवत्ते जीवा कुणरेसु जायंते।।914।।

अर्थात् दुर्भाव, अशुद्धि, सूतक-पातक दोष से युक्त, रजस्वला स्त्री और जाति संकर आदि दोष से दूषित लोग यदि दान देते हैं तो वे कुभोग भूमि में जन्म लेते हैं तथा जो कुपात्र में दान देते हैं वे भी कुभोग भूमि में जन्म लेते हैं।

आचार्यों के वचनों को प्रमाण मानते हुए आप सभी को अपनी जाति को शुद्ध रखना है क्योंकि जाति संकर से दूषित कुल में मोक्षमार्ग परम्परा नहीं चलती, सज्जाति परमस्थान के बिना पारिव्राज्य परम स्थान और मोक्ष मिलना असंभव है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्र चन्द्रिका परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस युग के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की आगम परम्परा का कट्टरता से पालन करते हुए सभी भव्य जीवों को अपना खानदान और खानपान शुद्ध रखने के लिए नितप्रति प्रेरणा देती रहती हैं। इसके लिए पूज्य माताजी ने 'सज्जाति' नाम से बहुत सुन्दर लेख लिखा है जिसे पढ़कर आप सभी आगम में दृढ़ हों और इस 'सप्त परमस्थान तीर्थंकर' विधान को करें, जिसमें सज्जाति आदि सप्तपरम स्थान की प्राप्ति के लिए सात तीर्थंकरों की भक्ति, पूजा का अवसर माताजी ने प्रदान किया है। मुख्यरूप से सभी को यह ध्यान रखना है कि सप्तपरम स्थान को प्राप्त करने के लिए सज्जाति परम आवश्यक है उसके बिना अन्य परमस्थान नहीं प्राप्त हो सकते।

इस युग के लिए वरदान स्वरूप, भूले भटके प्राणियों को मोक्षमार्ग में लगाने वाली, राष्ट्रगौरव, डी. लिट. की मानद उपाधि से अलंकृत, जैन भूगोल को धरती पर साकार कराने वाली परम पूज्य गणिनी आर्यिका शिरामेणि श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में सविनय वन्दामि वन्दामि वन्दामि।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. सप्तपरमस्थान तीर्थंकर पूजा (समुच्चय पूजा)	2
3. सज्जाति परमस्थान प्रदायक श्री ऋषभदेव जिनपूजा	7
4. सद्गृहस्थ परमस्थान प्रदायक श्री चंद्रप्रभ पूजा	18
5. पारिव्राज्य परमस्थान प्रदायक श्री नेमिनाथ पूजा	27
6. सुरेन्द्र परमस्थान प्रदायक श्री पार्श्वनाथ पूजा	39
7. साम्राज्य परमपद प्रदायक श्री शीतलनाथ पूजा	51
8. आर्हन्त्य परमस्थान प्रदायक श्री शांतिनाथ पूजा	62
9. निर्वाण परमस्थान प्रदायक श्री महावीर पूजा	72
10. बड़ी जयमाला	87
11. प्रशस्ति	90
12. सप्तपरमस्थान विधान की मंगल आरती	91
13. णमोकार महामंत्र महिमा	92
14. भजन	95
15. भजन	96

मण्डल का नक्शा

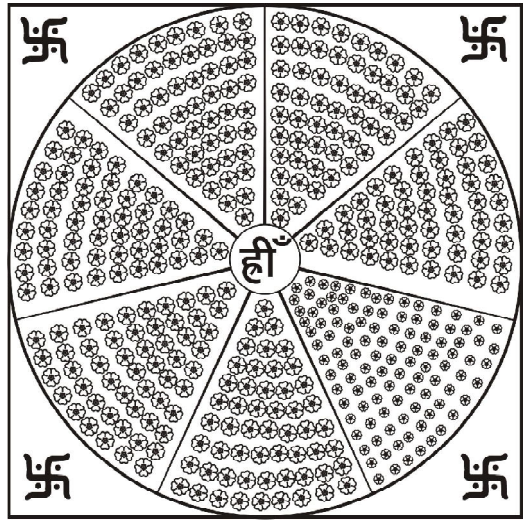

7 कोष्ठक में
प्रथम कोष्ठक में-54 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में-54 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में-54 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में-54 अर्घ्य
पंचम कोष्ठक में-54 अर्घ्य
षष्ठम कोष्ठक में-54 अर्घ्य
सप्तम कोष्ठक में-108 अर्घ्य

कुल अर्घ्य-432

कुल पूजा-8, कुल अर्घ्य-432, पूर्णार्घ्य-7, जयमाला-9

सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान

मंगलाचरण

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।1।।

ऋषभेश्वर! नौमि त्वां, सज्जातिपददायकम्।
चंद्रप्रभं जिनं वन्दे, सद्गार्हस्थ्यविधायकम्।।2।।

नेमिनाथ! नमामि त्वां, पारिव्राज्यपदाप्तये।
सुरेन्द्रत्वपदप्राप्त्यै, पार्श्वनाथं नमाम्यहम्।।3।।

शीतलेश! नमामि त्वां, साम्राज्यस्थानप्राप्तये।
आर्हन्त्यपदप्राप्त्यर्थं, शांतिनाथं नुमो मुदा।।4।।

निर्वाणपदलब्ध्यर्थं, महावीरस्वामिनं नुमः।
सप्ततीर्थंकरान् नौमि, सप्तभयविहानये।।5।।

सप्ततीर्थंकरा लोके, सप्तपरमस्थानदाः।
सर्वसिद्धिप्रदातार-स्तेभ्यो मेऽनन्तशो नमः।।6।।

सप्तभूमिमतिक्रम्य, येऽष्टमीभूमिहेतवे।
यजन्ते भक्तितो भव्याः, प्राप्नुवन्त्यन्तिमां गतिम्।।7।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सप्तपरमस्थान तीर्थंकर पूजा

(समुच्चय पूजा)

–स्थापना-गीता छंद–

तीर्थेश जिनवर सप्त को, प्रणमूँ सदा वर भाव से।
श्री सप्तपरमस्थान हेतु, नित्य पूजूँ चाव से।।
आह्वान थापन सन्निधापन, भक्ति श्रद्धा से करूँ।
सज्जाति से निर्वाण तक, पद सप्त की अर्चा करूँ।।1।।

–दोहा–

ऋषभदेव श्रीचंद्रप्रभ, नेमि पार्श्व भगवान।
शीतल जिन श्री शांतिप्रभु-महावीर गुणखान।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव-चन्द्रप्रभ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-शीतलनाथ-शांतिनाथ-महावीरस्वामितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव-चन्द्रप्रभ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-शीतलनाथ-शांतिनाथ-महावीरस्वामितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव-चन्द्रप्रभ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-शीतलनाथ-शांतिनाथ-महावीरस्वामितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक –(चाल-नंदीश्वर-श्रीजिनधाम)

जल शीतल निर्मल शुद्ध, केशर मिश्र करूँ।
अंतर्मल क्षालन हेतु, शुभ त्रय धार करूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अलिचुंबित गंध, कुंकुम संग मिला।
भव दाह निकंदन हेतु, चर्चत सौख्य मिला।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफल सम वर शुभ्र, तंदुल धोय धरूँ।
वर पुंज चढ़ाऊँ आन, उत्तम सौख्य वरूँ।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार वकुल मचकुंद, सुरभित पुष्प लिया।
मदनारि विनाशन हेतु, अर्चूं खोल हिया।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध उत्तम पकवान, घृत से पूर्ण भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, अर्चूं भक्ति भरे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ज्योति प्रकाश, जगमग ज्योति करे।
दीपक से पूजा सत्य, ज्ञान उद्योत करे।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत पाप जरें।
वर सप्त पदों को पूज, उत्तम सौख्य वरें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी दाख, एला थाल भरे।
फल से पूजत शिव सौख्य, अनुपम प्राप्त करें।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, उत्तम अर्घ्य किया।।
मैं सप्तपरमपद हेतु, सप्त जिनेन्द्र जजूँ।
सब कर्म कलंक विदूर, परिनिर्वाण भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

शांतीधारा देय, सप्तपरमपद को जजूँ।
परम शांति सुख हेतु, सब जग शांती हेतु मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित लायके।
सप्तपरमपद हेतु, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- **(1) ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादि-सप्ततीर्थंकरेभ्यो नमः।**

(2) ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेव-चंद्रप्रभ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-शीतलनाथ-शांतिनाथ-महावीर-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

गुणरत्नाकर सप्तजिन, भव्यकुमुद भास्वान।
सप्तपरमपद पाय के, भोगें सुख निर्वाण।।1।।

चाल-श्रीपति जिनवर.....

शुभजाति गोत्र वरवंश तिलक, जो सज्जाती के जन्मे हैं।
जो उभय पक्ष की शुद्धि सहित, औ उच्चगोत्र में जन्मे हैं।।
वे प्रथम परम पद सज्जाती, पाकर छहपद के अधिकारी।
वह सज्जाती स्थान सदा, भव भव में होवे गुणकारी।।2।।

धर्मार्थ काम त्रय वर्गों को, जो बाधा रहित सदा सेते।
पंचाणुव्रत औ सप्तशील, धारण कर सद्गृहस्थ होते।।
वे ही भव भोगों से विरक्त, जिनदीक्षा धर मुनि बनते हैं
प्राव्राज्य तृतीय परम पद पा, निज आतम अनुभव करते हैं।।3।।

विधिवत् सन्यास मरण करके, देवेन्द्र परम पद पाते हैं।
स्वर्गों के अनुपम भोगभोग, फिर चक्रीश्वर बन जाते हैं।।
सोलह कारण भावन भाकर, तीर्थंकर पद को पाते हैं।
छठवें आर्हन्त्य परम पद को, पाकर शिवमार्ग चलाते हैं।।4।

सब कर्म अघाती भी विनाश, निर्वाण रमापति हो जाते।
जो काल अनन्तानन्तों तक, सुखसागर में निमग्न होते।।
इन सप्त परमस्थानों को, क्रम से भविजन पा लेते हैं।
जो सप्तपरमपद व्रत करते, वे अंतिमपद वर लेते हैं।।5॥

श्री ऋषभदेव सज्जाति परम, स्थान प्रदाता माने है।
श्री चंद्रप्रभू जिन सद्गृहस्थ स्थान विधाता माने हैं।।
श्रीनेमिनाथ पारिव्राज परमस्थान प्रदायक मुनि कहते।
श्री पार्श्वनाथ की पूजा से स्थान सुरेन्द्र भव्य लहते।।6।।

श्री शीतलप्रभु की पूजा से साम्राज्य परम पद मिलता है।
श्री शांतिनाथ का मंत्र जपें आर्हन्त्य परमपद मिलता है।।
श्री वीरप्रभु की भक्ती से निर्वाण परम पद पाते हैं।
जो भक्ती से पूजन करते वे अंतिम पद पा जाते हैं।।7।।

ये एक-एक तीर्थंकर भी सम्पूर्ण परमपद देते हैं।
फिर भी आराधन पृथक्-पृथक्, आगम में मुनिगण कहते हैं।।
जो सप्त परमस्थान भजें, व्रत करें भक्ति से यजन करें।
वे लौकिक सुख संपत्ति पाय, लोकोत्तर लक्ष्मी वरण करें।।8।।

–घत्ता–

जय सप्तपरमपद, त्रिभुवन सुखप्रद,
जय जिनवर पद नित्य नमूँ।
'सज्ज्ञानमतीधर', शिव लक्ष्मीवर,
जिनगुण सम्पत्ती परणूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवादितीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सज्जातिपरमस्थानप्रदायक
श्री ऋषभदेव जिनपूजा

स्थापना– गीता छंद

हे ऋषभदेव जिनेन्द्र! आदिनाथ!युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती के विधाता हो तुम्हीं।
सज्जाति परमस्थान दाता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक! श्री ऋषभदेव!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं

जिनवचसम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकरायजन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनुसम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति, जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।

श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फूलों से युक्त, अर्घ समर्प्य किया।।
श्री ऋषभदेव जिनराज, पूजूँ तीर्थंकर।
सज्जाति परमस्थान, पाऊँ क्षेमंकर।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद –

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।

आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीऋषभदेवतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीऋषभदेवतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीऋषभदेवतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीऋषभदेवतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मास शेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीऋषभदेवतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(54 अर्घ्य)

–दोहा–

परम चिदंबर चित्पुरुष, चिदानंद भगवान्।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अमलान।।1।।

अथ मंडलस्योपरि प्रथमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं युगादिपुरुषगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिनिधनगुणन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं वियद्गामिगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जागरूकगुणविशिष्टाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियगुणविकसिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तर्द्धिगुणधारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धिगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं पराघ्र्यगुणधारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं मौनिगुणनिधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं धुर्यगुणधारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं भटगुणप्रकटिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं शूरगुणविवर्द्धकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं सार्थवाहगुणविधायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं शिवाध्वगुणविधायकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं मोक्षसाधनोपायप्रदर्शक-साधुगुणनिधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं द्वादशगणवेष्टित-गणिगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं सुताधारगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पाठकगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृग्गुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं आदीशगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं आदिभूभर्तृगुणविधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं आदिमगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं आदिजिनेश्वरगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं आदितीर्थंकरगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं आदिसृष्टिकृद्गुणविकसिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं आदिदेशकगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं आदिब्रह्मगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं आदिनाथगुणधारकाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं अर्च्चगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं आदिषट्कर्मदेशकगुणान्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं आदिधर्मविधातृगुणान्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं आदिधर्मराजगुणप्रकटिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं अग्रजगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं अग्रिमगुणविभूषिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं श्रेयान्गुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं श्रेयस्करगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं श्रेयोगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं श्रेयोऽग्रणीगुणनिधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं सुखावहगुणान्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं श्रेयोद्गुणविकसिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं श्रेयवाराशिगुणान्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं श्रेयवान्गुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं श्रेयसंभवगुणमंडिताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं नाभेयगुणनिधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं आदियोगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं मनुगुणप्रधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं आद्यगुणविशिष्टाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं कुलकरगुणसनाथाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं सन्मतिप्रियगुणान्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं संस्कृतगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं प्राकृतगुणसमन्विताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं प्राज्ञगुणनिधानाय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं जिनाद्याद्यगुणप्राप्ताय श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

मात-पिता कुल उभय पक्ष की, शुद्धी सज्जाती है।
सम्यग्दर्शन सहित भव्य को, निश्चित मिल जाती है।।
सज्जाति स्थान प्रदाता, प्रभु को नित्य भजूँ मैं।
ऋषभदेव को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा –

तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

–शंभु छंद –

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंगशेखर छंद –

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।
जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।1।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।

जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।2।।
जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।3।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पंक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।4।।
सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।5।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।6।।
स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।7।।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।8।।

–दोहा–

वृषभ चिन्ह स्वर्णिम तनू, प्रथम तीर्थंकर आप।
'ज्ञानमती' सुख शांति दे, करो हमें निष्पाप।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सज्जातिपरमस्थानप्राप्तये श्रीऋषभदेवतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

सद्गृहस्थ परमस्थानप्रदायक
श्री चन्द्रप्रभ पूजा

–अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद –

अर्धचन्द्र सम सिद्ध शिला पर, श्रीचन्द्रप्रभ राजें।
चन्द्रकिरण सम देह कांति को, देख चन्द्र भी लाजे।।
सद्गार्हस्थ्य परमपद पाऊँ, नाथ! आप गुण गाके।
आह्वानन स्थापन करके, यजन करूँ हर्षाके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्रदायक! श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्रदायक! श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्रदायक! श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं-नरेन्द्रछंद –

गंगा सरिता का निर्मल जल, रजत कलश भर लाऊँ।
श्री चन्द्रप्रभ चरण कमल में, धारा तीन कराऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, गंध सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में चर्चूं, निजानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकिरणसम उज्ज्वल तंदुल, लेकर पुंज रचाऊँ।
अमल अखंडित सुख से मंडित, निजआतम पद पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली बेला कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
जिनवर चरण कमल में अर्पूं, निजगुण यश विकसाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिंड सदृश चरु ताजे, घेवर मोदक लाऊँ।
जिनवर आगे अर्पण करते, सब दुःख व्याधि नशाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ज्योति जलाकर, करूँ आरती भगवन्।
निज घट का अज्ञान दूर हो, ज्ञानज्योति उद्योतन।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाऊँ।
अशुभ कर्म के दग्ध हेतु मैं, अग्नी संग जलाऊँ।।

मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लाके थाल भराऊँ।
जिनवर सन्निध अर्पण करते, परमानंद सुख पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, आदिक अर्घ बनाऊँ।
उसमें रत्न मिलाकर अर्पूं, तीनरत्न निज पाऊँ।।
मुनि मनकुमुद विकासी चंदा, चन्द्रप्रभू को पूजूँ।
सद्गृहस्थस्थान प्राप्तकर, भव भव दुःख से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

पद्मसरोवर नीर से, चन्द्रप्रभ चरणाब्ज।
त्रयधारा विधि से करूँ, मिले शांति साम्राज्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधियुत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीताछंद–

जिनचंद्र विजयंते अनुत्तर, से चये आये यहाँ।
महासेन पितु माँ लक्ष्मणा के, गर्भ में तिष्ठे यहाँ।।

शुभ चंद्रपुरि में चैत्रवदि, पंचमि तिथी थी शर्मदा।
इंद्रादि मिल उत्सव किया, मैं पूजहूँ गुणमालिका।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णापंचम्यां चन्द्रप्रभतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्र जिनवर पौष कृष्णा, ग्यारसी शुभयोग में।
जन्में उसी क्षण सर्व बाजे, बज उठे सुरलोक में।।
तिहुँलोक में भी हर्ष छाया, तीर्थकर महिमा महा।
सुरशैल पर जन्माभिषव को, देखते ऋषि भी वहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदर्श में मुख देखकर, वैराग्य उपजा नाथ को।
वदि पौष एकादशि दिवस, इंद्रादि सुर आये प्रभो।।
पालकी विमला में बिठा, सर्वर्तुवन में ले गये।
स्वयमेव दीक्षा ली किया, बेला जगत वंदित हुए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रप्रभतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमि तिथी, सर्वर्तुवन में आ गये।
तरु नाग नीचे ज्ञान केवल, हुआ सुरगण आ गये।।
धनपति समवसृति को रचा, श्रीचंद्रप्रभ राजें वहाँ।
द्वादशगणों के भव्य जिनध्वनि, सुनें अति प्रमुदित वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां चन्द्रप्रभतीर्थंकरज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रजिन फाल्गुन सुदी, सप्तमि निरोधा योग को।
सम्मेदगिरि से मुक्ति पायी, जजें सुरपति भक्ति सों।।
हम भक्ति से श्रीचंद्रप्रभ, सम्मेदगिरि को भी जजें।
निज आत्म संपति दीजिए, इस हेतु ही प्रभु को भजें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां चन्द्रप्रभतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–दोहा–

ज्ञान नेत्र से लोकते, लोक अलोक समस्त।
चंद्रप्रभ जिनराज मम, शिवपथ करो प्रशस्त।।1।।

अथ मंडलस्योपरि द्वितीयकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जिनानां स्वामिस्वरूपजिनेन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।1।

ॐ ह्रीं जिनधौरेयगुणसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।2।

ॐ ह्रीं जिनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।3।

ॐ ह्रीं जिनाग्रणीगुणसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।4।

ॐ ह्रीं जिनेशगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

ॐ ह्रीं जिनशार्दूलगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।6।

ॐ ह्रीं जिनाधीशगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।7।

ॐ ह्रीं जिनोत्तमगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।8।

ॐ ह्रीं जिनराजगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

ॐ ह्रीं जिनज्येष्ठगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।10।

ॐ ह्रीं जिनेशिगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।11।

ॐ ह्रीं जिनपालकगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।12।

ॐ ह्रीं जिननाथगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।13।

ॐ ह्रीं जिनश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।14।

ॐ ह्रीं जिनमल्लगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।15।

ॐ ह्रीं जिनोन्नतगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।16।

ॐ ह्रीं जिननेतृगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।17।

ॐ ह्रीं जिनस्रष्टृगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।18।

ॐ ह्रीं जिनड्गुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।19।

ॐ ह्रीं जिनपतिगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।20।

ॐ ह्रीं कर्मशत्रुविजयिजिननामप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।21।

ॐ ह्रीं जिनदेवगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।22।

ॐ ह्रीं जिनादित्यगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।23।

ॐ ह्रीं जिनेशितृगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।24।

ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।25।

ॐ ह्रीं जिनवर्यगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।26।

ॐ ह्रीं जिनाराध्यगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।27।

ॐ ह्रीं जिनार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।28।

ॐ ह्रीं जिनपुंगवगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।29।

ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।30।

ॐ ह्रीं जिनध्येयगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।31।

ॐ ह्रीं जिनमुखगुणसमन्विताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।32।

ॐ ह्रीं जिनेडितगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।33।

ॐ ह्रीं जिनसिंहगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।34।

ॐ ह्रीं जिनप्रेक्षगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।35।

ॐ ह्रीं जिनवृद्धगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।36।

ॐ ह्रीं जिनोत्तरगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।37।

ॐ ह्रीं जिनमान्यगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।38।

ॐ ह्रीं जिनस्तुत्यगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।39।

ॐ ह्रीं जिनप्रभुगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।40।

ॐ ह्रीं जिनोद्वहगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।41।

ॐ ह्रीं जिनपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।42।

ॐ ह्रीं जिनाकांक्षिगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।43।

ॐ ह्रीं जिनेन्दुगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।44।

ॐ ह्रीं जिनसत्तमगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।45।

ॐ ह्रीं जिनाकारगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।46।

ॐ ह्रीं जिनोत्तुंगगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।47।

ॐ ह्रीं जिनपगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।48।

ॐ ह्रीं जिनकुंजरगुणप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।49।

ॐ ह्रीं जिनभर्तृगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।50।

ॐ ह्रीं जिनाग्रस्थगुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।51।

ॐ ह्रीं जितभृत्गुणविशिष्टाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।52।

ॐ ह्रीं जिनचक्रभाग्गुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।53।

ॐ ह्रीं जिनचक्रिगुणधारकाय श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।54।

–पूर्णार्घ्य –

सर्वजनों से मान्य जगत में, सद्गृहस्थ पद माना।
धर्म-अर्थ अरु काम-मोक्ष का, आकर श्रेष्ठ बखाना।।
सद्गार्हस्थ परम पद दाता, प्रभु को नित्य भजूँ मैं।
चंदाप्रभ को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्राप्तये श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा –

परम हंस परमात्मा, परमानंद स्वरूप।
गाऊँ तुम गुण मालिका, अजर अमर पद रूप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय श्री चन्द्रप्रभो जिनवर, जय जय तीर्थंकर शिव भर्ता।
जय जय अष्टम तीर्थेश्वर तुम, जय जय क्षेमंकर सुख कर्ता।।
काशी में चन्द्रपुरी सुंदर, रत्नों की वृष्टी खूब हुई।
भू धन्य हुई जन धन्य हुए, त्रिभुवन में हर्ष की वृद्धि हुई।।2।।

प्रभु जन्म लिया जब धरती पर, इन्द्रों के आसन कंप हुए।
प्रभु के पुण्योदय का प्रभाव, तत्क्षण सुर के शिर नमित हुए।।
जिस वन में ध्यान धरा प्रभु ने, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कुसुम खिले लहिये।।3।।

सब जात विरोधी गरुड़, सर्प, मृग, सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिनपद चूम रहे।।
दश लाख वर्ष पूर्वायू थी, छह सौ कर तुंग देह माना।
चिंतित फल दाता चिंतामणि, अरु कल्पतरू भी सुखदाना।।4।।

श्रीदत्त आदि त्रयानवे गणधर, मनपर्यय ज्ञानी माने थे।
मुनि ढाई लाख आत्मज्ञानी, परिग्रह विरहित शिवगामी थे।।
वरुणा गणिनी सह आर्यिकाएँ, त्रय लाख सहस अस्सी मानीं।
श्रावक त्रय लाख श्राविकाएँ, पण लाख भक्तिरस शुभध्यानी।।5।।

भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहिं पाया हूँ।
प्रभु तुम सब जग के त्राता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
गणपति सुरपति नरपति नमते, तुम गुणमणि की बहु भक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिये।।6।।

–दोहा –

हे चन्द्रप्रभ! आपके, हुए पंच कल्याण।
मैं भी माँगूं आपसे, बस एकहि कल्याण।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गार्हस्थ्य-परमस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

पारिव्राज्य परमस्थानप्रदायक
श्री नेमिनाथ पूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज – करो कल्याण आतम का.....)

नमन श्री नेमि जिनवर को, जिन्होंने स्वात्मनिधि पायी।
तजी राजीमती कांता, तपो लक्ष्मी हृदय भायी।।
परिव्राड् बन सकूँ भगवन्! पधारो मुझ मनोम्बुज में।
करूँ मैं अर्चना रुचि से, अहो उत्तम घड़ी आई।।1।।
नमन श्री...।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

(तर्ज –ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी.....)

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
भव भव में नीर पिया, नहिं प्यास बुझा पाये।
तुम पद धारा देने, पद्माकर जल लाये।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, जल धारा करने आये हैं।।
भगवान.।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
चंदन चंदा किरणें, नहिं शीतल कर सकते।
तुम पद अर्चा करने, केशर चंदन घिसके।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, चरणों में चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज सुख के खंड हुए, नहिं अक्षय पद पाये।
सित अक्षत ले करके, तुम पास प्रभो! आये।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, सित पुंज चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
हे नाथ! कामरिपु ने, त्रिभुवन को वश्य किया।
इससे बचने हेतू, बहु सुरभित पुष्प लिया।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, ये पुष्प चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध पकवान चखे, नहिं भूख मिटा पाये।
इस हेतू चरु लेकर, तुम निकट प्रभो! आये।।

परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज मन में अंधेरा है, अज्ञान तिमिर छाया।
इस हेतू दीपक ले, प्रभु पास अभी आया।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, हम आरति करने आये हैं।।
भगवान.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
कर्मों ने दुःख दिया, तुम कर्मरहित स्वामी।
अतएव धूप लेके, हम आये जगनामी।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, हम धूप जलाने आये हैं।।
भगवान.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध के फल खाये, नहिं रसना तृप्त हुई।
ताजे फल ले करके, प्रभु पूजूँ बुद्धि हुई।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, फल अर्पण करने आये हैं।।
भगवान.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
प्रभु तुम गुण की अर्चा, भवतारन हारी है।
भवदधि में डूबे को, अवलंबनकारी है।।
परिव्राज्य परमपदप्राप्ति हेतु, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद –

यमुना नदी का नीर स्वर्णभृंग में भरूँ।
श्रीनेमिनाथ के चरण में धार मैं करूँ।।
चउसंघ में सब लोक में भि शांति कीजिए।
बस ये ही एक याचना प्रभु पूर्ण कीजिए।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हे नेमि! श्वेत शंख आप चिन्ह शोभता।
ये सुरभि पुष्प भी तो घ्राण नयन मोहता।।
प्रभु पाद कमल में अभी पुष्पांजलि करूँ।
सब रोग शोक दूर हों निज संपदा भरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

श्रीसमुद्रविजय शौरीपुरि, नृप पितु मात शिवादेवी।
गर्भ बसे शुभ स्वप्न दिखाकर, तिथि कार्तिक शुक्ला षष्ठी।।

गर्भकल्याणक पूजा करते, मिले राह कल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
श्रावण शुक्ला छठ में मति श्रुत, अवधिज्ञानि प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।
जन्मकल्याणक पूजा करते, मिले राह उत्थान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
चले ब्याहने राजुल को, पशु बंधे देख वैराग्य हुआ।
श्रावण सुदि छठ सहस्राम्र वन, में प्रभु दीक्षा स्वयं लिया।
दीक्षा तिथि जजते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीनेमिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
आश्विन सुदि एकम पूर्वाण्हे, ऊर्जयंत गिरि पर तिष्ठे।
केवलज्ञान सूर्य प्रगटा तब, प्रभु को वांसवृक्ष नीचे।।

समवसरण में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां श्रीनेमिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।
प्रभु गिरनार शैल से मुक्ती, रमा वरी शिवधाम गये।
सुदि आषाढ़ सप्तमी सुरगण, वंद्य नेमि जगपूज्य हुए।।
जो निर्वाण कल्याणक पूजें, मिले राह निर्वाण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां श्रीनेमिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–दोहा–

गुणरत्नाकर तीर्थंकर, तुम पद परम पुनीत।
कुसुमांजलि करके यहाँ, मैं अर्चूं धर प्रीत।।1।।

अथ मंडलस्योपरि तृतीयकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं ज्ञानमूर्तिगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जिनसेव्यगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जिनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जिनकान्तगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जिनप्रीतगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जिनाधिराट्गुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं जिनप्रियगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जिनधुर्यगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जिनार्चाघ्रिगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जिनाग्रिमगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जिनस्तुतगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जिनहंसगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जिनत्रातृगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जिनर्षभगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जिनाग्रगगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जिनधृद्गुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जिनचक्रेशगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जिनदातृगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जितात्मकगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जिनाधिकगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जिनालक्षगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जिनशांतगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जिनोत्कटगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जिनाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जिनाल्हादिगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जिनातर्क्यगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जिनान्वितगुणविशिष्टाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं शमदमशासनोपदेशकजैनगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जैनवरगुणविशिष्टाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जैनस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जैनपितामहगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जैनेड्यगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जैनसंघार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जैनभृद्गुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं जैनपालकगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं जैनकृद्गुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं जैनधौरेयगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं जैनेशगुणविशिष्टाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं जैनभूपतिगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं जैनेड्गुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं जैनाग्रिमगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं जैनपितृगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं जैनहितंकरगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं जैननेतृगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं जैनाढ्यगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं जैनधृदगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं जैनदेवराड्गुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं जैनाधिपगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं जैनात्मगुणविशिष्टाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं जैनेक्ष्यगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं जैनचक्रभृद्गुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं जिताक्षगुणधारकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं जितकंदर्पगुणप्राप्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं जितकामगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

पंचमहाव्रत पंचसमिति, त्रय गुप्ति सहित जो माना।
वर चारितमय परीव्राज्य पद, जग में सर्व प्रधाना।।
परिव्राज्य पद परम प्रदाता, प्रभु को नित्य भजूँ मैं।
नेमिनाथ को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(तर्ज –चंदन सा बदन.....)

नेमी भगवन्! शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
कर जोड़ खड़े, तव चरण पड़े, हम शीश झुकाते चरणों में।।टेक.।।

यौवन में राजमती को वरने, चले बरात सजा करके।
पशुओं को बांधे देख प्रभो! रथ मोड़ लिया उल्टे चल के।।
लौकांतिक सुर संस्तव करके, पुष्पांजलि की तव चरणों में।।नेमी.।।1।।

प्रभु नग्न दिगंबर मुनि बने, ध्यानामृत पी आनंद लिया।
कैवल्य सूर्य उगते धनपति ने, समवसरण भी अधर किया।।
तब राजमती आर्यिका बनी, चतुसंघ नमें तव चरणों में।।नेमी.।।2।।

वरदत्त आदि ग्यारह गणधर, अठरह हजार मुनिराज वहाँ।
राजीमति गणिनी आदिक, चालिस हजार संयतिकाएँ वहाँ।।
इक लाख सुश्रावक तीन लाख, श्राविका झुकीं तव चरणों में।।नेमी.।।3।।

सर्वाण्ह यक्ष अरु कूष्मांडिनि, यक्षी प्रभु शंख चिन्ह माना।
आयू इक सहस वर्ष चालिस, कर सहस देह उत्तम जाना।।
द्वादशगण से सब भव्य वहाँ, शत-शत वंदें तव चरणों में।।नेमी.।।4।।

प्रभु समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
चउ दिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्म कहें।।
सौ इन्द्र मिले पूजा करते, नित नमन करें तव चरणों में।।नेमी.।।5।।

प्रभु के विहार में चरण कमल, तल स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहुकोशों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।
तनु नीलवर्ण सुंदर प्रभु को, सब वंदन करते चरणों में।।नेमी.।।6।।

तरुवर अशोक था शोकरहित, सिंहासन रत्न खचित सुंदर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
निज सात भवों को देख भव्य, प्रणमन करते तव चरणों में।। नेमी.।।7।।

सुरदुंदुभि बाजे बाज रहे, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चंवर।
सुरपुष्पवृष्टि नभ से बरसे, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव आदि, अतिभक्ति लीन तव चरणों में।।नेमी.।।8।।

हे नेमिनाथ! तुम बाह्य और अभ्यंतर लक्ष्मी के पति हो।
दो मुझे अनंत चतुष्टयश्री, जो ज्ञानमती सिद्धिप्रिय हो।।
इसलिए अनंतों बार नमें, हम शीश झुकाते चरणों में।।नेमी.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारिव्राज्य-परमपदप्राप्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सुरेन्द्रपरमस्थानप्रदायक
श्री पार्श्वनाथ पूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज-गोमटेश जय गोमटेश मम हृदय विराजो.....)

पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना भाते हैं, प्रतिक्षण ऐसी रुचि बनी रहे।
हो रसना में प्रभु नाममंत्र, पूजा में प्रीती घनी रहे।।हम0।।

हे पार्श्वनाथ आवो आवो, आह्वान आपका करते हैं।
हम भक्ति आपकी कर करके, सब दुख संकट को हरते हैं।।
देवेन्द्र परमपद प्राप्ति हेतु, गुण कीर्तन में मति बनी रहे।।हम0।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्रदायक! श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्रदायक! श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्रदायक! श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं –

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
सुरगंगा का उज्ज्वल जल ले, प्रभु चरणों त्रयधार करूँ।
पुनर्जन्म का त्रास दूर हो, इसीलिए प्रभु ध्यान धरूँ।।
भव भव तृषा मिटाने वाली, पूजा जिन भगवान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
मलयागिरि का शीतल चंदन, केशर संग घिसाया है।
प्रभु के चरण कमल में चर्चत, भव संताप मिटाया है।।
तन मन को शीतल कर देती, अर्चा जिन भगवान की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
वंदे जिनवरं-4।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
चिन्मय परमानंद आतमा, नहीं मिला इन्द्रिय सुख में।
प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ाते, सौख्य अखंडित हो क्षण में।।
इन्द्र सभी मिल करें वंदना, प्रभु के अक्षयज्ञान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
रतिपति विजयी पार्श्वनाथ को, पुष्प चढ़ाऊँ भक्ती से।
निज आत्मा की सुरभि प्राप्त हो, निजगुण प्रगटे युक्ती से।।
ब्रह्मर्षीसुर स्तुति करते, चिच्चैतन्य महान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मालपुआ रसगुल्ला बरफी, जिनवर निकट चढ़ाते ही।
नाना उदर व्याधि विघटित हो, समरस तृप्ती प्रगटे ही।।
गणधर मुनिवर भी गुण गाते, महिमा जिन भगवान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

केवलज्ञान सूर्य हो भगवन् ! मुझ अज्ञान हटा दीजे।
दीपक से मैं करूँ आरती, ज्ञान ज्योति प्रगटित कीजे।।
चक्रवर्ति भी करें वंदना, अतिशय ज्योतिर्मान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

सुरभित धूप धूपघट में मैं, खेऊँ सुरभि गगन फैले।
कर्म भस्म हो जाएं शीघ्र ही, जो हैं अशुभ अशुचि मैले।।
सम्यग्दर्शन क्षायिक होवे, मिले राह उत्थान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

अनंनास मोसम्मी नींबू, सेव संतरा फल ताजे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, मिले मोक्षफल भव भाजें।।
जिनवंदन से निजगुण प्रगटे, मिले युक्ति शिवधाम की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।।
इसी हेतु त्रिभुवन जनता भी, भक्ति करे भगवान की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा करत ही, भवजल को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल चंपा सुरभि, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले निजातम संपदा, होवे भव दुःख अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।टेक0।।
विश्वसेन पितु ब्राह्मी माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितीया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ.।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।
पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।
पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।

स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।
चैत्रवदी सुचतुर्थी प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–सोरठा –

तीर्थंकर अवतार, पार्श्वनाथ जग वंद्य हो।
करो भवोदधि पार, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं जिताशयगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं जितैनस्गुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं जितकर्मारिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं जितेन्द्रियगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं जिताखिलगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं जितशत्रुगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं आशासमूहविजयिजिताशौघगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं जितजेयगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं जितात्मभाग्गुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं जितलोभगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं जितक्रोधगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जितमानगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जितान्तकगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जितरागगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जितद्वेषगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जितमोहगुणविभूषिताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वरगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जिताजय्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जिताशेषगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जितेशगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जितदुर्मतगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जितवादिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जितमुंडगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जिताव्रतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जितदेवगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जितशान्तिगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जितखेदगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जितारतिगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं यतीडितगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं यतीशार्च्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं यतीशगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं यतिनायकगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं यतिमुखगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं यतिप्रेक्ष्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं यतिस्वामिगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं यतीश्वरगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं यतिगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं यतिवरगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं यत्याराध्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं यतिगुणस्तुतगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं यतिश्रेष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं यतिज्येष्ठगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं यतिभतृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं यतीहितगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं यतिधुर्यगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं यतिसृष्टृगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं यतिनामगुणविशिष्टाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं यतिप्रभुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं यत्याकारगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं यतित्रातृगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं यतिबंधुगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं यतिप्रियगुणधारकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं योगीन्द्रगुणप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

कोटि कोटि सुर सहित महर्द्धी, गुण सम्पन्न कहाता।
सुरपति पद सब देवगणों में, आज्ञा नित्य चलाता।।
वर सुरेन्द्र पद दाता जजते, उत्तम सौख्य भजूँ मैं।
पार्श्वनाथ को अष्ट द्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन.....)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्री चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।

नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।जय.।।1।।

यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।जय.।।2।।

प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंबर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।जय.।।3।।

धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।जय.।।4।।

यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।
सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।जय.।।5।।

गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।जय.।।6।।

नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्ग जयी संकट मोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महा सहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।जय.।।7।।

चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्य कहे॥
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।।जय.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्रत्वपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

साम्राज्यपरमपदप्रदायक
श्री शीतलनाथ पूजा

–अथ स्थापना (शंभुछंद) –

हे शीतल तीर्थंकर भगवन्! त्रिभुवन में शीतलता कीजे।
मानस शारीरिक आगंतुक, त्रय ताप दूर कर सुख दीजे।।
चारण ऋद्धीधारी ऋषिगण, निज हृदय कमल में ध्याते हैं।
साम्राज्य परमपद स्वामी का आह्वान कर हर्षाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं (शंभु छंद) –

भर जावे पूरा त्रिभुवन भी, प्रभु इतना नीर पिया मैंने।
फिर भी नहिं प्यास बुझी अब तक, इसलिए नीर से पूजूँ मैं।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परमपद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु त्रिभुवन में भी घूम घूम, शीतलता चाही चंदन से।
प्रभु अब शीतलता होवेगी, चंदन तुम पद में चर्चन से।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सब पद प्राप्त किया, वे खंड खंड हो बिखर गये।
अक्षत से पूजूँ पद पंकज, हो मुझ अखंड पद इसीलिए।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कीर्ति सुगंधी त्रिभुवन में, प्रभु फैल रही गणधर गायें।
इसलिए सुगंधित कुसुम लिये, तुमपद पूजें निज यश पायें।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तीनलोक से अधिक अन्न, पकवान खा चुका मैं जगमें।
फिर भी नहिं भूख मिटी इनसे, अतएव चरू से पूजूँ मैं।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा त्रिभुवन में, नहिं देख सका निज आत्मा को।
इसलिए दीप से मैं पूजूँ, निज ज्ञान ज्योति मुझ प्रगटित हो।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म त्रिजग में दुःख देते, इनको अब शीघ्र जलाने को।
मैं धूप अग्नि में खेऊँ अब, प्रभु पूजा यश फैलाने को।।

हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध फल की प्राप्ति हेतु, मैं घूम चुका प्रभु त्रिभुवन में।
अब एक मोक्ष फल प्राप्ति हेतु, फल मधुर चढ़ाऊँ तुम पद में।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मनिधी को भूल गया, बस मूल्य विषय सुख का आंका।
अब अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ मैं, प्रभु पाऊँ रत्नत्रय सांचा।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
साम्राज्य परम पद प्राप्ती हो, सब जन भी शीतलता पावे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमपदप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रभु त्रयधारा करूँ, त्रिभुवन शांती हेतु।
शीतल जिन की भक्ति है, भवि को भवदधि सेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।

शीतल जिन पदकमल में, पुष्पांजलि विकिरंत।
तिहुंजग यश विस्तारके, त्रिभुवन सौख्य भरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद–

शीतल प्रभू अच्युत सुरग से, भद्रिकापुरि आ गये।
दृढ़रथ पिता माता सुनंदा, के गरभ में आ गये।।

तिथि चैत्र कृष्णा अष्टमी, धनपति रतन बरसा रहा।
इन्द्रादि गर्भोत्सव किया, पूजत गरभ के दुख दहा।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि माघ कृष्णा द्वादशी, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, सुर इन्द्र थे हर्षित तबे।।
सुरशैल पर पांडुकशिला पे, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत, मेरा जनम पावन हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमनाश देखा नाथ के, मन में विरक्ती छा गई।
वदि माघ बारस पालकी, शुक्रप्रभा तब आ गई।।
सुरपति सहेतुक बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
सिद्धं नमः कह लोच कर, दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदि चौदश जिनेश्वर, शुक्ल ध्यानी हो गये।
तब बेलतरु तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।
सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वचपीयूष से, तारा जजूँ जिनसूर्य को।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टम तिथी, सम्मेदगिरि पे जा बसे।
इक सहस साधू साथ ले, मुक्तीनगर में जा बसे।।
अतिशय अतीन्द्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पा लिया।
शीतल प्रभू का मोक्षकल्याणक, जजत निजसुख लिया।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–सोरठा –

गणपति नरपति वंद्य, सुरपति नरपति से नमित।
पूजूँ भक्ति अमंद, पुष्पांजलि चढ़ाय के।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पंचमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं योगिराड्गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं योगिपतिगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं योगिविनायकगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं योगीश्वरगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं योगीशगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं योगिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं योगपरायणगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं योगिपूज्यगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं योगांरागुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं योगवद्गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं योगपारगगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं योगधृद्गुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं योगरूपात्मगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं योगभाग्गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं योगभूषितगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं योग्यन्तगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं योगिकल्पांगगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं योगिकृद्गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं योगिमुख्यार्च्यगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं योगिभूगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं योगिभूपतिगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकज्ञगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं सर्वदृग्गुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वतत्वविद्गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं सर्वक्लेशसहगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं सार्वगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं सर्वचक्षुर्गुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं सर्वराड्गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं सर्वाग्रिमगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं सर्वात्मगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं सर्वेषगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं सर्वेज्यगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं सर्वधर्मांगगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवदयावहगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वज्येष्ठगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं सर्वाधिकगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिजगद्हितगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं सर्वधर्ममयगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं सर्वस्वामिगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वगुणाश्रितगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्गुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं विश्वनाथार्च्यगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं विश्वेड्यगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं विश्वबांधवगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं विश्वनाथगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं विज्वार्हगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं विश्वात्मगुणालंकृताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं विश्वकारकगुणालंकृताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं विष्वेड्गुणालंकृताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं विश्वपितृगुणालंकृताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं विश्वधरगुणालंकृताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं विश्वाभयंकरगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

षट्खण्डाधिप चक्रवर्ति पद, वैभव पूर्ण जगत में।
सम्यग्दर्शन शून्यजनों को, मिलना दुष्कर सच में।।
शुभ साम्राज्य परमपद दाता, जजते सौख्य भजूँ मैं।
शीतल प्रभु को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा –

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम ध्वनि सुन भविवृंद नित, हरें सकल संताप।।1।।

–शंभु छंद –

जय जय शीतल जिन का वैभव, अंतर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्शज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय गुणमय है।।

बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
गुरु गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, यह तीस कोश की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभें।।4।।

अंधे पंगू रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महा वीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

जिनवर से बारह गुणे तुंग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर, लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये दूर-दूर तक गाँवों में, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जलपूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अतिसुंदर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

प्रभु समवसरण में इक्यासी, गणधर सप्तर्द्धि समन्वित हैं।
सब एक लाख मुनिराज वहाँ, मूलोत्तर गुण से मंडित हैं।।
गणिनी धरणाश्री तीन लाख, अस्सी हजार आर्यिका कहीं।
श्रावक दो लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख भक्ति में लीन रहीं।।8।।

नब्बे धनु तुंग देह स्वर्णिम, इक लाख पूर्व वर्षायू थी।
है कल्पवृक्ष का चिन्ह प्रभो! दशवें तीर्थंकर शीतल जी।।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, वांछित फलदाता कल्पतरू।
मैं पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, निज आत्म सुधा का पान करूँ।।9।।

हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम वच तुम गुण गावें।।10।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

आर्हन्त्यपरमस्थान प्रदायक
श्री शांतिनाथ पूजा

अथ स्थापना –गीता छंद

हे शांतिजिन! तुम शांति के, दाता जगत विख्यात हो।
इस हेतु मुनिगण आपके, पद में नमाते माथ को।।
आर्हन्त्य परमस्थान स्वामी, आपको जो पूजते।
आर्हन्त्य लक्ष्मी प्राप्तकर वे, भव दुःखों से छूटते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्रदायक! श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टकं –गीता छंद

चिरकाल से बहुप्यास लागी, नाथ! अब तक ना बुझी।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, जजन की मनसा जगी।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप शीतल हेतु भगवन्! बहुत का शरणा लिया।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार मैं जन्मा मरा, अब तक न पाया पार है।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूँ तुम सार है।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूँ।
मनसिजविजेता तुम जजत, निज आत्मगुणपरिचय करूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी मैं छूटहूँ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, मन में उजेला हो सही।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकार-विनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते।।

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्म-विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।
इस हेतु फल से तुम जजूँ, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
जजूँ अर्घ्य लेकर पूजते ही, पूर्ण होगी कामना।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
आर्हन्त्य पद दे दीजिये, फिर हो भी याञ्चा नहीं।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा मैं करूँ, मिटे सकल भव खेद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।

इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–सोरठा –

गुण समुद्र के गुणरतन, को गिन पावे पार।
पुष्पांजलि से पूजते, भरे सौख्य भंडार।।1।।

अथ मंडलस्योपरि षष्ठकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं विश्वेशिगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं विश्वधृद्गुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं विश्वभूमिपगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं विश्वधीगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं विश्वकृद्गुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं विश्वपारगगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं विश्वबृद्धगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं विश्वांगिरक्षकगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं विश्वपोषकगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं जगत्कर्तृगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं जगद्भर्तृगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं जगत्त्रातृगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं जगज्जयिगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं जगन्मान्यगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं जगज्जयेष्ठगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं जगच्छ्रेष्ठगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं जगत्पतिगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं जगद्धृतगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं जगन्नाथगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं जगद्ध्येयगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं जगत्स्तुतगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं जगत्पातृगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं जगद्धातृगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं जगत्सेव्यगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं जगच्छ्रुतगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं जगत्स्वामिगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं जगत्पूज्यगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं जगत्सार्थगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं जगद्हितगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं जगद्वेत्तृगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं जगच्चक्षुर्गुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं जगद्दर्शिगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं जगत्पितृगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं जगत्कांतगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं जगद्दांतगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं जगद्ज्ञातृगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं जगज्जितगुणधारकाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं जगद्धीरगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं जगद्वीरगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रान्तगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रियगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं महाज्ञानिगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं महाकृतिगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं महाव्रतिगुणालंकृताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं महाराजगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणसमन्विताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं महातेजोगुणमंडिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं महातपोगुणप्राप्ताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं महाजेतृगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं महाजय्यगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं महाक्षान्तगुणविशिष्टाय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

–पूर्णार्घ्य –

चतुर्निकाय देवगण पूजित, महामहोत्सवकारी।
तीर्थंकर पद सर्वोत्तम पद, त्रिभुवन जन सुखकारी।।
तीर्थंकर स्थान परमपद, पूजत सौख्य भजूँ मैं।
शांतिनाथ को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा –

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्ष थल, गाऊँ प्रभु गुणगान।।1।।

–स्रग्विणी छंद –

मैं नमूँ मैं नमूँ शांति तीर्थेश को। नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

विश्वसेन प्रिया मात ऐरावती। वर्ष इक लाख आयू कनक वर्ण ही।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

देह चालीस धनु चिन्ह मृग ख्यात है। जन्म भू हस्तिनापूरि विख्यात है।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

नाथ के समवसृति में सभा मध्य ये। साधु बासठ सहस मूलगुणधारि थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

चक्र आयुध प्रमुख गणपती श्रेष्ठ थे। ऋद्धि संयुक्त छत्तीस मुनिज्येष्ठ थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

आर्यिका हरीषेणा प्रधाना तथा। साठ हज्जार त्रय सौ सभी आर्यिका।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।7।।
दोय लक्षा सुश्रावक प्रभू भाक्तिका। चार लक्षा कहीं श्राविका सद्व्रता।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।8।।
सौख्य हेतू भटकता फिरा विश्व में। किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।9।।
नाथ ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे। शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अबे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।10।।
स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो। पूर्ण चारित्र धारूँ जो निष्काम हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।11।।
पूर्ण शांती जहाँ पे वहीं वास हो। परम आर्हन्त्यपद भक्त को प्राप्त हो।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।12।।

–दोहा–

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, नमूँ नमूँ नतशीश।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं आर्हन्त्यपरमपदप्राप्तये श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

निर्वाणपरमस्थानप्रदायक
श्री महावीर पूजा

-अथ स्थापना-

(तर्ज-तुमसे लागी लगन.....)

आप पूजा करें, शीघ्र सिद्धी वरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
आवो आवो यहाँ नाथ! श्रीमन्!
पूजा भक्ति करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्रदायक! श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्रदायक! श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्रदायक! श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टकं–

(तर्ज-चंदन सा बदन.....)

–शंभु छंद–

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।

हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
निर्वाण परमस्थान हेतु, हम शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीर प्रभो! हम अर्घ्य चढ़ा, कर नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपेंद्रवज्रा छंद –

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले है भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।

सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरतीर्थंकरनिर्वाण-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (54 अर्घ्य)

–दोहा –

ध्यानामृत पीकर भये, मृत्युंजयि प्रभु आप।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, हरो सकल संताप।।1।।

अथ मंडलस्योपरि सप्तमकोष्ठके पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं महादमगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं महादान्तगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं महाशांतगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं महाकान्तगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं महाबलिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं महादेवगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं महापूतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं महाधनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं महाकामिगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं महाशूरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं महाभटगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं महायशोगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं महानादगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं महास्तुत्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं महामहपतिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्तममहागुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं महाधीरगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं महावीरगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं महाबंधुगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं महाश्रमगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं महाधारगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं महाकारगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं महाशर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं महाश्रयगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं महायोगिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं महाभोगिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं महाब्रह्मगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं महीधरगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं महाधुर्यगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं महावीर्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं महादर्शिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं महार्थविद्गुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं महामहाभर्तृगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं महाकर्तृगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं महाशीलगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं महागुणिनामालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं महाधर्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं महामौनिगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं महाभरगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं महाग्रिमगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं महास्रष्ट्रगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं महातीर्थगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं महाख्यातगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं महाहितगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं महाधन्यगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं महाधीशगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं महारूपिगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं महामुनिगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं महाविभुगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं महाकीर्तिगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं महादातृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं महारतगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं महाकृपगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं महाराध्यगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं महाश्रेष्ठगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं महायतिगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं महाक्षान्तिगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं महालोकगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं महानेत्रगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं महार्घकृद्गुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं महाश्रमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं महायोग्यगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं महाशमिगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं महादमिगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं महेशेशगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं महेशात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं महेशार्च्यगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं महेशराड्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं महानन्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं महातृप्तगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं महाहरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं महावरगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं महर्षीशगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं महाभागगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं महास्थानगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं महान्तकगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं महौदर्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं महाकार्यगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं महाकेवललब्धिगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं महाशिष्टगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं महानिष्टगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं महादक्षगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं महाबलगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं महालक्षगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं महार्थज्ञगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं महाविद्वद्गुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं महात्मकगुणान्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं महेज्यार्हगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं महानाथगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं महानेतृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं महापितृगुणविशिष्टाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं महामनोगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं महाचिन्त्यगुणधारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं महासारगुणविभूषिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं महायमिगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रार्च्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं महावंद्यगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं महावादिगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं महानुतगुणालंकृताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं परमात्मगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं परात्मज्ञगुणप्राप्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं परंज्योतिगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं परार्थकृद्गुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं परब्रह्मगुणनिधानाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं परब्रह्मरूपगुणास्पदाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं परतरगुणास्पदाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं परमेशगुणनिधानाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

–गीता छंद –

घाति अघाती कर्म घातकर, हुए निकल परमात्मा।
शुद्ध सिद्ध कृतकृत्य निरंजन, लोक शिखर गत आत्मा।।
परिनिर्वाण परमपद पूजत, निरुपम सौख्य भजूँ मैं।
महावीर को अष्टद्रव्य ले, हर्षित भाव जजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिनिर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं अर्हं परिनिर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

प्रभो चरणों की भक्ति से, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुख संपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।
जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।
चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।
श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।
प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता–

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

बड़ी जयमाला

–शंभु छंद –

हे आदिनाथ! हे आदीश्वर! हे वृषभ जिनेश्वर! नाभिललन!
पुरुदेव! युगादिपुरुष! ब्रह्मा, विधि और विधाता मुक्तिकरण।।
मैं अगणित बार नमूँ तुझको, वन्दूं ध्याऊँ गुणगान करूँ।
स्वात्मैक परम आनन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करूँ।।1।।

षट् मास योग में लीन रहे, लंबित भुज नासा दृष्टी थी।
निज आत्म सुधारस पीते थे, तन से बिल्कुल निर्ममता थी।।
फिर ध्यान समाप्त किया प्रभु ने, आहार विधी बतलाने को।
भव सिंधू में डूबे जन को, मुनिमार्ग सरल समझाने को।।2।।

षट्मास भ्रमण करते-करते, प्रभु हस्तिनागपुर में आये।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस तभी, आहार दान दे हर्षाये।।
रत्नों की वर्षा हुई गगन से, सुरगण मिल जयकार किया।।
धन्य-धन्य हुई वैशाख सुदी, अक्षय तृतीया आहार हुआ।।3।।

क्रोधादिक रिपु को जीत प्रभो, स्वात्मा से जनित सुखामृत को।
पीकर अत्यर्थतया निशदिन, भव से सु निकाला आत्मा को।।
त्रिभुवन के मस्तक पर जाकर, अब तक व अनंते कालों तक।
ठहरेंगे वे पुरुदेव! मुझे लोकाग्रसंपदा देवें झट।।4।।

भव वन में घूम रहा अब तक, किंचित् भी सुख नहीं पाया हूँ।
हे चंद्रप्रभो! तुम ज्ञाता हो, अतएव शरण में आया हूँ।।
सुरपति गणपति नरपति नमते, तव गुणमणि की बहुभक्ति लिए।
मैं भी नत हूँ तव चरणों में, अब मेरी भी रक्षा करिये।।5।।

हे प्रभु! तुमने जहाँ ध्यान धरा, उस वन की शोभा क्या कहिए।
जहाँ शीतल मंद पवन बहती, षट् ऋतु के कमल खिले लहिए।।
सब जात विरोधी गरुड़ सर्प मृग सिंह खुशी से झूम रहे।
सुर खेचर नरपति आ आकर, मुकुटों से जिनपद चूम रहे।।6।।

भव वन में भ्रमते-भ्रमते अब, मुझको कथमपि विज्ञान मिला।
हे नेमि प्रभो! अब नियम बिना, नहिं जाने पावे एक कला।।
मैं निज से पर को पृथक् करूँ, निज समरस में ही रम जाऊँ।
मैं मोह ध्वांत का नाश करूँ, निज ज्ञान सूर्य को प्रकटाऊँ।।7।।

प्रभु समवसरण में कमलासन, पर चतुरंगुल से अधर रहें।
चउदिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्मा हैं।।
प्रभु के विहार में चरण कमल, तल स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहु कोसों तक दुर्भिक्ष टले, षट्ऋतुज फूल फल खिल जाते।।8।।

तरुवर अशोक था शोक रहित, सिंहासन रत्न खचित सुन्दर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
सुरदुंदुभि बाजे बाज रहें, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चमर।
सुर पुष्पवृष्टि नभ से बरसे, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।9।।

भव संकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिव पथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।10।।

यदि किसी तरह से हे शीतल! शशि किरण सदृश तव वचन मिले।
भव आतप से झुलसे प्राणी, के तत्क्षण ही मन कुमुद खिले।।
फव्वारागृह अमृतवाणी, मलयाचल चंदन भी फिर क्या ?
त्रिभुवन दुख दाव शांत करते, शीतल तव वचन अहो फिर क्या ?।।11।।

श्री शांतिप्रभो! शरणागत जन, शान्ती के दाता कहें तुम्हें।
यह धन्य हुई हस्तिनापुरी, जहाँ राज्य किया शांतीश्वर ने।।
षोडश तीर्थंकर कामदेव, पंचम चक्री त्रय पदधारी।
वर ज्येष्ठ वदी चौदस के दिन, त्रिभुवन साम्राज्य मिला भारी।।12।।

सम्यग्दर्शन औ ज्ञान चरण, ये रत्नत्रय निधि मुझे मिली।
तनु से ममता भव बीज अहा! सम्यग्दृक् कलिका आज खिली।।

हे शांतिनाथ! मैं नमूँ सदा, बस भक्ती का फल एक मिले।
नहिं बार-बार मैं जन्म धरूँ, बस मुझको सिद्धी शीघ्र मिले।।13।।

महावीर वीर सन्मति भगवन्! अतिवीर सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान भव वारिधि से, अब मुझको पार तुरत करिये।।
वह कुंडलपुरि जग पूज्य हुई, सिद्धार्थ दुलारे जन्मे थे।
प्रियकारिणि माँ की गोदी में, त्रिभुवन के गुरुवर खेले थे।।14।।

हे वीरप्रभो! मंगलमय तुम! लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुंज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।
मैं बारम्बार नमूँ तुमको, भगवन्! मेरे भव त्रास हरो।
'सज्ज्ञानमती' सिद्धी देकर, स्वामिन्! अब मुझे कृतार्थ करो।।15।।

–दोहा–

सप्तपरमस्थानप्रद, सप्त तीर्थंकर वंद्य।
नमूँ अनंतों बार मैं, पाऊँ सौख्य अनंत।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तपरमस्थानप्रदायक-श्रीऋषभदेव-चंद्रप्रभ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-शीतलनाथ-शांतिनाथ-महावीरस्वामितीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

जो सप्तपरमस्थान तीर्थंकर विधान सदा करें।
वे भव्य क्रम से सप्तपरमस्थान की प्राप्ती करें।।
संसार के सुख प्राप्त कर फिर सिद्धिकन्या वश करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से भविमन कमल विकसित करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

सप्तपरमस्थान विधान प्रशस्ति

चौबीस तीर्थंकर को वंदूँ, माँ सरस्वती को नमन करूँ।
गणधर गुरु के सब साधू के, श्री चरणों में नित शीश धरूँ।।
इस युग में कुंदकुंदसूरी, का अन्वय जगत् प्रसिद्ध हुआ।
इसमें सरस्वती गच्छ बलात्कार, गण अतिशायि समृद्ध हुआ।।1।।

इस परम्परा में साधु मार्ग, उद्धारक दिग्अंबर धारी।
आचार्य शांतिसागर चारित्र-चक्रवर्ती पद के धारी।।
इन गुरु के पट्टाधीश हुए, आचार्य वीरसागर गुरुवर।
इनकी मैं शिष्या गणिनी-ज्ञानमती आर्यिका प्रथित भू पर।।2।।

वीराब्द पच्चीस शतक उनतालिस, श्रावण सुदि प्रतिपद शुभतम।
हस्तिनागपुर में अनुपम व्रत, सप्तपरमस्थान उत्तम।।
यह सप्तपरमस्थान विधान, भक्ती से मैंने पूर्ण किया।
प्रभु सात तीर्थंकर के नानाविध, गुणगण का स्तवन किया।।3।।

मैंने जिनवर की भक्तीवश, बहुतेक विधान रचें सुंदर।
इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र पूजा मनहर।।
श्री जम्बूद्वीप व तीनलोक, आदिक विधान जगमान्य हुए।
भक्तीप्रधान इस युग में तो, भक्तों को अतिशय मान्य हुए।।4।।

श्री सप्तपरमस्थान तीर्थंकर, का विधान जग प्रिय होवे।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक भक्तों का अघ धोवे।।
भव्यों को सप्त परमस्थान का, दाता अतिशयकारी हो।
कैवल्य ज्ञानमति पाने तक, जिनवर भक्ती सुखकारी हो।।5।।

।।इति सप्तपरमस्थानविधानं संपूर्णं।।

।।जैनं जयतु शासनम्।।

सप्तपरमस्थान विधान की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-चल दिया छोड़ घर बार.....

जय सप्तपरमस्थान, सात भगवान, हृदय में ध्याऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।टेक.।।

सज्जाति प्रदायक ऋषभदेव,
चन्द्रप्रभ सद्गृहस्थ पद दें।
प्रभु नेमिनाथ को पारिव्राज्य में ध्याऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।1।।

चौथा सुरेन्द्रता परमस्थान,
उस हेतु नमूँ प्रभु पार्श्वनाथ।
साम्राज्य हेतु शीतलजिन के गुण गाऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।2।।

आर्हन्त्य परमस्थान छठा,
सप्तम निर्वाणस्थान कहा।
इन प्राप्ति हेतु प्रभु शांति-वीर को ध्याऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।3।।

इनका मंदिर भी निर्मित है,
श्री जम्बूद्वीप के परिसर में।
प्रेरिका ज्ञानमती गणिनी मात को ध्याऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।4।।

इनका व्रत-पूजन आदि करो,
करके विधान सुखलाभ वरो।
'चन्दनामती' क्रम से इनको मैं पाऊँ,
आरति का थाल सजाऊँ।।5।।

णमोकार महामंत्र की महिमा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-अरे जग जा रे चेतन.....

अरे देखो रे! महिमा मंत्र की,
णमोकार की महिमा निराली है।।अरे...।।टेक.।।

एक कहानी सुन लो भाई, जैन रामायण में है आई।
अरे पशु भी बन गया देव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।1।।

नगर महापुर में इक श्रेष्ठी, धर्म में उनकी बहुत रुची थी।
वे पद्मरुचि चले घूमने,
णमोकार की महिमा निराली है।।2।।

बूढ़ा बैल दिखा इक उनको, मरणासन्न देखकर उसको।
अरे मंत्र सुनाया कान में,
णमोकार की महिमा निराली है।।3।।

बैल ने मंत्र सुना शान्ती से, निकले प्राण तभी उस तन से।
उसी नगरी में बना युवराज वह,
णमोकार की महिमा निराली है।।4।।

राजा छत्रच्छाय की रानी, उनके पुत्र की सुनो कहानी।
हुए वृषभध्वज युवराज वे,
णमोकार की महिमा निराली है।।5।।

एक बार युवराज नगर में, घूम रहे थे उसी जगह पे।
हुआ पूर्वजनम का ज्ञान रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।6।।

जान लिया मैं बैल था पहले, वहाँ बहुत दुःख पाये मैंने।
महामंत्र सुना था अंत में,
णमोकार की महिमा निराली है।।7।।

सोचा उसने कैसे खोजूँ, बदला उपकारी का चुका दूँ।
मिला जिससे नरभव आज रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।8।।

उसने वहीं मंदिर बनवाया, सोच के उसमें चित्र बनाया।
उस चित्र में बैल व सेठ थे,
णमोकार की महिमा निराली है।।9।।

कोतवाल इक वहाँ बिठाया, उसको चित्र का सार बताया।
कोई ध्यान से देखे तो बुलवाना,
णमोकार की महिमा निराली है।।10।।

इक दिन पद्मरुची वहाँ आये, चित्र देख मन में हरषाये।
इसे किसने बनाया बोल पड़े,
णमोकार की महिमा निराली है।।11।।

बैल को मंत्र सुनाया था मैंने, किन्तु हमें देखा न किसी ने।
फिर कैसे बना यह चित्र है,
णमोकार की महिमा निराली है।।12।।

कोतवाल सब देख रहा है, सेठ के भाव को समझ रहा है।
गया बतलाने फिर महल में,
णमोकार की महिमा निराली है।।13।।

राजकुमार तुरत ही आये, उपकारी से मिल हरषाये।
उनके पद किया प्रणाम रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।14।।

बैल का जीव ही मैं हूँ भाई, आपने ही नरगति दिलवाई।
उपकार करूँ क्या आपका,
णमोकार की महिमा निराली है।।15।।

दोनों मित्र बने आपस में, श्रावक व्रत धारण किया मन में।
तब बैल बना सुग्रीव रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।16।।

पद्मरुची फिर राम बन गये, मित्र से उनके काम बन गये।
फिर मुक्त हुए संसार से,
णमोकार की महिमा निराली है।।17।।

कहे 'चन्दनामति' तुम सबसे, कथा पढ़ो यह रामायण से।
भव दुख से हो उद्धार रे,
णमोकार की महिमा निराली है।।18।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

तर्ज–सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।